303H
1734
FATHIMA
STD VII A

कविवर रवीन्द्रनाथ

संपादक

श्री. पी. जे. जोसफ़
(हिन्दी लेक्चरर, मार ईवान्योस कालेज, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. पी. परमेश्वरन पिल्लै B. Sc. (Eng.)
(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टि B. A; साहित्यरत्न
(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

MOHAN PUBLICATIONS.

राष्ट्र भाषा साहित्य समिति
स्टाच्यू रोड त्रिवेन्द्रम-१

Standard X Book No. 2

1871

MUNAWIRUL ISLAM HIGH SCHOOL
Date 30-3-4
ERNAKULAM.

कविवर रवीन्द्रनाथ

1712

संपादक

श्री. पी. जे. जोसफ़

(हिन्दी लेक्चरर, मार ईवान्योस कालेज, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. पी. परमेश्वरन पिळ्ळै B. Sc. (Eng.)

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टि B. A; साहित्यरत्न

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

★

प्रकाशक

श्री. के. प्रभाकरन नायर

कावुविला हाउस,

जगति, तिरुवनन्तपुरम ।

दाम ७५ नये पैसे

KAVIVAR RAVINDRANATH

(LIFE HISTORY)

FIRST IMPRESSION, COPIES 1500

1957

PUBLISHER

SRI. K. PRABHAKARAN NAIR

KAVUVILA HOUSE

JAGATHY, TRIVANDRUM.

All rights reserved]

[*Price 75 nP.*

संपादकीय

हमारे छात्र-जगत् में उपयोगी हिन्दी पुस्तकों के नितांत अभाव ने विद्यार्थियों की बौद्धिक प्रगति को अवरुद्ध किया है। उस अभाव की सर्वांगीण पूर्ति का विनम्र प्रयास है, यह पुस्तकमाला। इसमें रचना की लोकप्रियता तथा अक्लिष्टता के लिए प्रचलित संस्कृत शब्दों का प्रयोग एवं केरल के छात्रमण्डल की प्रवृद्ध बौद्धिकता के अनुरूप वस्तु-व्यंजना—ये दोनों कार्य अध्यापनकला में अपने विपुल अनुभव के आधार पर हमारे निष्कर्ष हैं।

प्रबंध, नाटक, जीवनी, गल्प आदि विभिन्न रूपों के द्वारा विज्ञान, धर्म्म, कला, संस्कृति—सभी क्षेत्रों का संस्पर्श करके विद्यार्थियों में महत्वकांक्षा जाग्रत कर, एक सांस्कृतिक चेतना फैलाने का प्रयास आप इन पन्नों पर देख सकेंगे। बौद्धिक विकासक्रम में छात्रों के विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखकर उसी के अनुरूप सभी पुस्तकों की रचना की गयी है। यहाँ तक कि कठिन शब्दों की अर्थ-सूची तथा मुहावरों का प्रयोग भी क्रम क्रम से प्रस्तुत हैं। स्तर पर स्तर ये मृदुल श्रम-सीकर सागर से चिर सुंदर बन जाएँ।

* * * *

शीघ्रता के कारण यत्र-तत्र जो त्रुटियाँ हुई हैं उन्हें सहृदय पाठक गण क्षमा करें।

इस किताब के बारे में

महान व्यक्तियों ने एकदम महानता को प्राप्त नहीं किया था। उसके लिए उन्हें कई अग्नि-परीक्षाओं से होकर गुज़रना पडता था। रवीन्द्रनाथ की जीवनी भी इसका उदाहरण है। उस महान विश्व कवि के कवि-हृदय का शब्द-चित्र खींचने का प्रयास है यह ग्रन्थ।

के. वी. कृष्णनकुट्टी.

MUNAVVIRUL ISLAM HIGH SCHOOL ERNAKULAM

कविवर

रवीन्द्रनाथ

वंग देश के एक [1] धनी आदमी श्री. रमेश चन्द्र दत्त का घर। घर खूब [2] सजा हुआ है। अत्याकर्षक रूप में अन्दर [3] शहनाई बज रही है। कई लोग आ जा रहे हैं। वहाँ एक शादी होने वाली है। श्री. रमेश चन्द दत्त की बेटी की शादी। [4] पंडाल के अन्दर कई सज्जन आ उपस्थित हैं। उन सज्जनों के बीच में श्री. बंकिम चन्द्र चाटर्जी भी बैठे हुए थे। बंकिम चन्द्र बंग भाषा के एक सुविख्यात उपन्यास कार हैं। यद्यपि वे अपनी मातृभाषा बंगला में ही लिखा करते थे तो भी अन्य भाषाओं में भी उनकी कीर्ति उन्नत थी। बंकित चन्द्र उपस्थित लोगों से बातचीत कर रहे हैं। लग-भग बीस बरस का एक [5] प्रियदर्शी युवक वहाँ प्रवेश करते हैं।

---

[1] धनी = धनवान

[2] सजा हुआ = अलंकृत

[3] शहनाई = संगीत-यंत्र, बाजे

[4] पंडाल = मंडप

[5] प्रियदर्शी = सुन्दर

उस युवक को देखकर बंकिम चन्द्र अत्यन्त सन्तुष्ट हो जाते हैं। वे उठ खडे हो जाते हैं और उस युवक का स्वागत करते हैं। वे कहते हैं—"रमेश! "सन्ध्या गीत" पढा क्या? उस विख्यात कृति का रचयिता है यह युवक। संध्या गीत के रचयिता के लिये यह रहे।" इतना कहकर वे अपने गले से एक अमूल्य रत्न हार [1] उतार कर उस युवक को पहनाते हैं। सब लोग आश्चर्य भरी दृष्टि से उस युवक की ओर ही देखते हैं।

क्या, आप जानते हैं वह बीस बरस का युवक कौन था? वह था युव कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर।

बंग माता की कितने ही संतान विश्व विख्यात हुए हैं। भारत [2] आर्ष भूमि है। इस पुरानी भूमि की आध्यात्मिका को बढानेवाले कितने महान हुए हैं। उनमें श्री. रामकृष्ण और विवेकानन्द का स्थान अत्युन्नत है। इन दोनों महान व्यक्तियों की जन्मभूमि बंग थी। विज्ञान में भी बंगाल पीछे नहीं है। विश्वविख्यात [3] वैज्ञानिक स्व०. पी. सी. राय और जगदीशचन्द्र बसु

---

[1] उतारना = बंधन खोलना

[2] आर्ष = ऋषि-संबन्धी

[3] वैज्ञानिक = विज्ञान में निपुण

भी यहीं पैदा हुए थे। राजाराम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्या सागर आदि [1] समाज सुधारक भी बंगदेश की ही संतान थे। सुरेन्द्र नाथ बानर्जी, सेन गुप्त, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आदि [2] राजनीतिज्ञों और देशप्रेमियों की भी माता बनने का सौभाग्य बंग भूमि को मिला। विश्वविख्यात नाटककार स्व० द्विजेन्द्रलाल राय, उपन्यासकार बंकिम चन्द्र चाटर्जी, शरत् चन्द्र चाटर्जी आदि भी बंगाल में ही पैदा हुए थे। इस प्रकार साहित्य में, विज्ञान में, राजनीति में, आध्यात्मिकता में और अन्य कई क्षेत्रों में बंगाल का स्थान समुन्नत था।

इसी बंगाल में ही विश्वमहाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का भी जन्म हुआ था।

ठाकुर [3] रवानदान बंगाल का विख्यात खानदान है। इस खानदान का निवासस्थान जोडासाँको प्रासाद था। यह कलकत्ते में था। जोडासाँको प्रासाद कलाकेन्द्र था, साहित्य मन्दिर था और साथ ही साथ [4] सम्पदागार भी था। वहाँ का हर व्यक्ति किसी न

---

[1] समाज सुधारक = समाज की उन्नति करने वाला

[2] राजनीतिज्ञ = राजनीति में निपुण

[3] खानदान = कुटुंब

[4] संम्पदागार = संपत्ति का आगार

किसी प्रकार [1] नामी हो गया था। वंग में कई महात्माओं का जन्म हुआ है। पर जोडासाँको का ठाकुर खानदान अन्य खानदानों के समान नहीं था। यहाँ कला और कमला एक साथ विराजती थीं। यही इसकी एक बडी विशेषता है। वंग देश की उन्नति तथा विख्याति में जिन जिन खानदानों का हाथ है उनमें सबसे ऊँचा तथा उत्तम स्थान ठाकुर के खानदान का भी है। ऐसा [2] सुशिक्षित सुसम्पन्न, और सुविख्यात खानदान बंगाल में और कहीं नहीं था। इसका नाम [3] आजकल का नहीं है। सत्रहवीं सदी से लेकर यह विख्यात होने लगा था। बडे [4] दार्शनिक, कवि, [5] आलोचक, चित्रकार, [6] गवैये आदि इसी खानदान में पैदा हुए। भारत में सबसे पहले जो ऐ. सी. एस. (I. C. S) परीक्षा में पास हुआ था वह भी इसी खानदान का था। क्या औरत, क्या आदमी सब क्रियाशील रहते थे। प्रसिद्ध लेखिका स्वर्णकुमारी देवी और इंग-बंग समाज की अध्यक्षा ज्ञानदानंदिनी आदि इसी कुटुंब की देन थीं।

---

[1] नामी होना = प्रसिद्ध, विख्यात होना

[2] सुशिक्षित = विद्या संपन्न

[3] आजकल का = इन दिनों का

[4] दार्शनिक = तत्वचिन्तक

[5] आलोचक = निरूपण करनेवाले

गवैया = गानेवाला (गायक)

इसी जोडासाँको प्रासाद के ठाकुर खानदान में सन् १८६१ जून की छठी तारीख को रवीन्द्र का जन्म हुआ।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पिता का नाम देवेन्द्रनाथ ठाकुर था। इन्हें लोग "महर्षि" नाम से पुकारते थे। ये बडे विद्वान और दार्शनिक थे। उस समय बंगाल में महर्षि के समान सुसम्मत दूसरा कोई नहीं था। बचपन से ही देवेन्द्रनाथ भौतिक सुखों से [1] विरक्त था। धन-दौलत पर उसकी प्रीति नहीं थी। देवेन्द्रनाथ अपने पिता द्वारकानाथ का बडा लडका था। जब द्वारकानाथ का [2] देहान्त हुआ तब लोगों ने सोचा कि उनकी अमित सम्पत्ति का अधिकारी बनकर देवेन्द्र की विरक्ति स्वयं हीं [3] मिट जाएगी। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। पिता की मृत्यु के बाद देवेन्द्रनाथ को मालुम हुआ कि पिता के नाम पर [4] भारी [5] कर्ज है। पिता ने अपने बडे बेटे देवेन्द्र के नाम पर एक बडी [6] रकम छोड गये थे।

---

[1] विरक्त = विमुख

[2] देहान्त होना = मर जाना

[3] मिट जाना = नष्ट होना

[4] भारी = बडा

[5] कर्ज = ऋण

[6] रकम = रूपयों की संख्या

इस रकम से देवेन्द्र [1] करोडपति बन सकते ते। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। देवेन्द्रनाथ ने अपने पिता के सभी [2] उत्तमर्णों को बुलाकर अपनी निजी संपत्ति उनको दे दी। उन्होंने उनसे कहा— "यदि इससे भी कर्ज पूरा न हुआ तो मैं आपका नौकर बनकर काम करूँगा"। सभी लोगों का हृदय [3] पिघल गया। देवेन्द्र की महानता उनको मालुम हुई। उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया। आखिर देवेन्द्र ने कुछ ही समय में उत्तमर्णों का रुपया वापस दिया। इस घटना के बाद देवेन्द्र को महर्षि नाम मिला था। इस महर्षि का छोटा बच्चा था रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

भारत के अंधविश्वासों के अन्तक के रूप में हम राजाराम मोहनराय से परिचित हैं। उन्होंने इसके लिए अश्रांत परिश्रम किया था। महर्षी भी उन्हीं तत्वों के समर्थक थे। महर्षि उन तत्वों के लिए [4] आठों पहर कोशिश करते रहते थे। भारत के [5] रूढी-वादी लोग और गोरों की सरकार इनके विरुद्ध थी। फिर भी उन्होंने उनकी

---

[1] करोडपति = बडा धनवान

[2] उत्तमर्ण = कर्ज देनेवाला

[3] पिघलना = आर्द्र होना

[4] आठों पहर = सारा दिन

[5] रूढियाँ = पुरानी रीतियाँ

परवाह तक न की अपने अन्त तक लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कोशिश करते रहे। बंगाल के लोग उन महात्मा के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि रवीन्द्र भी ऐसे एक महात्मा का पुत्र बनकर प्रसिद्ध हो गया था।

रवीन्द्र को माँ का प्यार अधिक दिन तक [1]बदा नहीं था। मातृहीन बच्चे का पालन-पोषण करने का कर्तव्य पिता का है। लेकिन महर्षि घर में विरले ही आते थे। हमेशा वे घर से बाहर ही रहते थे। उनका कर्म-क्षेत्र विशाल समाज था। उनका लक्ष्य जनता का सुख था। इन परिस्थितियों में रवीन्द्र अकेले घर में रहते थे। उनकी [2]देख भाल करने के लिए नौकर रखे गये थे। [3]रह रहकर महर्षि घर में आते थे। शायद हम सोचेंगे कि रवीन्द्र स्वतंत्र बनकर रहते थे। लेकिन यह ठीक नहीं। यद्यपि उनकी देखरेख करने के लिए पिता घर में नहीं रहते तो भी वे अस्वतंत्र रूप में ही रहते थे। इस प्रकार रवीन्द्र का बचपन एक तरह की [4]नौकर शाही में बीत गया। घर से वे बाहर तक न जा सकते थे। हमेशा उनको

---

[1] बदा नहीं था = भाग्य में लिखा नहीं था

[2] देखभाल = पालन-पोषण,

[3] रह रहकर = कभी कभी

[4] नौकर शाही = अफसरों का कुशासन

एक [1]कैदी की तरह घर के [2]चाहर दीवारों के अन्दर ही रहना पडता था। उस एकान्तता में उनके मन का कवि [3]जाग्रत होने लगा था। [4]वे खिडकियों से बाहर की प्रकृति को देखते थे। एकान्त रहकर प्रकृति के अणु अणु का निरीक्षण करने में वे सफल हुए। उस कमरे में से देखने पर प्रकृति के कुछ सुन्दर दृश्य रवीन्द्र की [5]नज़रों में पडते थे। उनमें दो तीन दृश्य कभी उनके मन से अलग होनेवाले नहीं। वे एक तालब, एक बगीचा और एक विशाल [6]बरगद का पेड था। उस तालाब में नहाने के लिए आनेवाले लोगों को देखते रहना उनके लिए अत्यंत प्रिय था। वे किस प्रकार स्नान करते है, कितनी देर स्नान करते है, कैसे [7]डुबकियाँ मारते हैं यह सब ध्यान से वे देखते रहेंगे। सब लोगों के लौटने के बाद जब तालाब शान्त हो जाएगा तब वे उस की प्रशान्त सुन्दरता को [8]निहारने लगेंगे। फिर वे बरगद पर

---

[1] कैदी = बन्धित

[2] चाहर दीवारी = चारों ओर की दीवारों

[3] जाग्रत होना = जाग उठना

[4] खिडकी = झरोखा

[5] नजरों में पडना = आंखों में पडना, दिखाई पडना

[6] बरगद का पेड = वट-वृक्ष

[7] डूबकियाँ मारना = पानी के अन्दर पैठना

[8] निहारना = देखना

देखने लगेंगे। उदय सूर्य तथा अस्तसूर्य की किरणों से आभूषित वह बरगद का पेड उनकी याद में हमेशा के लिए रहा। उसको वे भूले नहीं। कई वर्ष बाद उन्होंने बचपन के उस मूक साथी की याद में कविता लिखी थी। धूली से लेकर तारामण्डल तक व्याप्त अनन्त प्रकृति का अतिसूक्ष्म निरीक्षण कर वे अंदर ही अंदर आनन्दित हो जाते थे। तब उस बालक के हृदय में कल्पना की लहरें [1] उमड आती थीं। बचपन से ही वे प्रकृति माता की आराधना करते रहे। शायद इसी कारण वे भविष्य में एक [2] भावुक कवि बन गये थे। क्योंकि प्रकृति के सौन्दर्य का भावुक के हृदय पर बडा प्रभाव होता ही रहता है।

हम सब अपनी चारों तरफ सुन्दर सुन्दर दृश्य देखते हैं। कहीं सुन्दर फूल खिले हुए हैं। तालाब में कमल हँस रहे हैं। फूलों पर मधुप मंडरा रहे हैं। कहीं "कल कल" शब्द के साथ बहने वाली सरिताएँ हैं। उसके दोनों किनारों पर स्थित पेड-पौधों का मरकत वर्ण [3] तबियत हरा कर देता है। हवा बहने लगती है। उस हवा के [4] झोंके खाकर ये वृक्ष-लतिकाएँ झूमने लगती है। झर

---

[1] उमड जाना = उठकर फैलना

[2] भावुक = भावना संपन्न

[3] तबियत हरा करना = संतुष्ट करना

[4] झोंका = हवा का धक्का

झर फूल झर जाते हैं। उनके बीच में चिडियाँ चहकती हुई उडती हैं। कोकिल "कू कू" करती है। रात में चन्द्रमा विराजमान होता है। अनन्त आकाश में तारागण झिल मिल रहे हैं। चाँदनी की शोभा भू को स्वर्ग-सा बना देती है। कहीं सूर्योदय का आकर्षक दृश्य और कहीं अस्तंगत सूर्य की मनहर शोभा। दुनिया में ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं जो इन प्राकृतिक [1] सुषमाओं को देखना नहीं चाहता। अमीर और गरीब, ऊँच और नीच, मूर्ख और पंडित, छोटा और बडा, आदमी और औरत और सब के सब इन दृश्यों को देखकर संतुष्ट हो जाते हैं। उसके फल स्वरूप मन में भावनाएँ उत्पन्न हो उठती हैं। लेकिन जिस प्रकार एक भावुक इन दृश्यों को देखता है वह एक विशेष रूप से है। हम तो प्रकृति के हर रूप को सिर्फ देखते ही हैं। लेकिन भावुक सिर्फ देखता नहीं। वह इन सारी वस्तुओं से बातचीत करता है। प्रकृति की ये पत्थर, फूल, जानवर, [2] तितली, पेड आदि सब चीज़ें एक कवि से बातें करती हैं। सिर्फ कवि ही उनकी मूक भाषा जाननेवाला है। प्रकृति को निहारते निहारते उसकी और कवि की आत्माएँ एक बन जाती हैं। उन में उस समय कोई अन्तर ही नहीं रहता।

---

[1] सुषमा = सुन्दरता

[2] तितली = Butter fly

कवि प्रकृति में और प्रकृति कवि में लीन हो जाती हैं। कवि का हृदय प्रकृति के सौंदर्य से इतना भर जाता है कि वह उसको बाहर प्रकट करने के लिए विवश हो जाता है। उसकी उमडती भावनाएँ स्वयं ही बाहर आकर कविता या अन्य कला-सृष्टि बन जाती हैं। इसलिए [1]अक्सर सब कवियों की [2]प्रारंभिक रचनाएँ प्रकृति पर होती हैं।

इस प्रकार ठाकुर जी भी पहले पहल प्रकृति का आराधक बन गया था। प्रकृति ने उनके मन में कविता भर दी। बचपन से ही वे कविता लिखने लगे थे।

एक विद्यार्थी के रूप में ठाकुर जी पीछे रहते थे। वे स्कूली शिक्षा में रुचि नहीं रखते थे। क्योंकि उस समय स्कूलों की पढाई ही ऐसी थी। विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार [3]अध्ययन करने की [4]सुविधाएँ उस समय नहीं थीं। आप जानते हैं कि उस समय अंग्रेज़ लोग भारत पर शासन कर रहे थे। विद्यालय चलानेवाले भी वे ही थे।

---

[1] अक्सर = Often

[2] प्रारंभिक = पहले का

[3] अध्ययन = पढना

[4] सुविधा = सुकरता

उनका उद्देश्य विद्यार्थियों को कलाकार क्या मनुष्य तक बनाना नहीं था। उन्हें क्लर्कों की आवश्यकता थी, [1] हिमायतों की अवश्यकता थी। उनकी सरकार को यहाँ स्थिर रखने के लिए वे विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी की कुछ बाते सिखाते थे। वह शिक्षा पाकर आनेवाले क्लार्क बन जाते थे। अंग्रेज़ी जाननेवालें कुछ क्लर्कों को और अफसरों को बनाना ही उस समय का मुख्य उद्देश्य था।

"स्वस्थ तन में स्वस्थ मन" ('Healthy mind in a healthy body") यही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। इस लक्ष्य को सफल बनाने के पर्याप्त बीज विद्यार्थियों के मन में [2] बोने का उचित स्थान विद्यालय हैं। वे [3] उगकर भविष्य में विकसित हो जाते हैं। यदि वह भविष्य के लिए उपयुक्त हुआ तो वही शिक्षा है। हर विद्यार्थी की रुचि अलग है। उस प्रकार बालक रवीन्द्र की भी रुचि अलग थी। वे उन अनावश्यक विषयों को पढना नहीं चाहते थे। हम देख चुके कि बचपन से ही रवीन्द्र की दिलचस्पी कविता पढने-लिखने और प्रकृति से प्रेम करने में थी। इस इच्छा को विकसित कर सफल बनाने की सुविधाएँ उन दिनों के विद्यालयों में नहीं थी।

---

[1] हिमायती = सहायता करनेवाला

[2] बोना = बीजारोप करना

[3] उगना = बीज में से पौधा निकलना

उस समय विद्यालयों में और एक मुसीबत थी। विद्यार्थियों को स्वतंत्ररूप से कुछ बोलने या कुछ करने का अधिकार नहीं था। वास्तव में स्कूलों में उनको गुलाम बनकर रहना पडता था। विचारों को ठंडा करने लायक पाठ ही उनको पढने के लिए थे। शायद आप को कासाबियांका की कहानी मालुम है। अनावश्यक विश्वस्तता दिखाकर स्वयं मृत्यु का [1] शिकार बन जानेवाला एक बेचारा लडका था कासाबियांका। यह कहानी अस्वतन्त्र भारत के विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन करनेवाली मानी जाती थी। अंग्रेज़ सरकार ने इस कहानी को बडी [2] महानता दी थी। लेकिन उनकी मातृ-भूमि के लिए और वहाँ के विद्यार्थियों के लिए यह कहानी महत्वपूर्ण नहीं थी। सारा भारत तो अंग्रेज़ सरकार का गुलाम् था ही। अंग्रेज़ लोग डरते थे कि शायह विद्यार्थी उनके विरुद्ध काम करने लगेंगे। क्योंकि उस समय भारत को [3] आज़ाद बनाने की कोशिश इधर उधर हो रही थी। रवीन्द्र बचपन से ही स्वतन्त्रता प्रेमी थे। इसलिए स्कूल की यह [4] गुलामी उन्हें अच्छी न लगी।

---

[1] शिकार = आहार

[2] महानता = महत्व

[3] आज़ाद = स्वतन्त्र

[4] गुलामी = अस्वतन्त्रता

इन कारणों से वे विद्यालय जाना नहीं चाहते थे। फिर भी पिता से डरकर कभी कभी वे स्कूल में जाते थे। अधिक दिन वे घर में ही रहे। घर में रह कर वे अपनी इच्छा की किताबें पढते थे। कभी कभी घंटों तक वे प्रकृति को देखते रहते थे। आखिर पिता को मालुम हुआ कि रवीन्द्र को स्कूल में जाने की इच्छा नहीं। लेकिन उस कुटुंब की महत्ता के अनुसार रवीन्द्र को भी सुशिक्षित बनाना चाहिए था। वंग के सब से बडे खानदानों में एक था उनका खानदान। महान भविष्य को लक्ष्य कर महर्षि रवीन्द्र को [1]डाँटने लगे, [2]धमकियाँ देने लगे, अत्यंत क्रोध के साथ व्यवहार करने लगे। सब कुछ होने पर भी रवीन्द्र के निश्चय में परिवर्तन नहीं हुआ। वे स्कूल में जाना नहीं चाहते थे। इसलिए आखिर महर्षि ने लडके को घर पर ही सिखाने का प्रबंध किया।

अध्यापक घर पर ही रवीन्द्र को पढाने लगे। रवीन्द्र को इस पढाई में भी कोई विशेषता दिखाई नहीं पडी। वे जो पढना चाहते थे उसे पढाने में वे अध्यापक सफल न हुए। वे

---

[1] डाँटना = क्रोध पूर्वक जोर से बोलना

[2] धमकियाँ देना = डराना

[1] लगातार मासिक पत्रिकाएँ और अन्य साहित्यिक रचनाएँ पढते रहे। बंगाल के पुराने कवियों की कविताएँ पढने में वे अतीव [2] रुचि रखते थे। यह सब अपने अध्यापकों की आज्ञा के बिना ही करते थे उन के मन में कविता का जो नवांकुर था वह इस ग्रन्थपारायण रूपी धारा से [3] सिंच गया और बढ बढकर विशाल बन गया। उस समय के प्रसिद्ध साहित्यकार बंकिम चन्द्र चाटर्जी थे। उन्होंने तब तक के बंगाली साहित्य में एक परिवर्तन किया। वह पुरानी साहित्य धारा नये पथ से होकर बहने लगी। उनकी रचनाओं में यह परिवर्तन व्यक्त होता था। इसलिए बंग देश में उनकी कृतियों का ऊँचा स्थान है। रवीन्द्र भी बंकिम चन्द्र की रचनाओं की ओर आकृष्ट हुए। जितनी किताबें उनको मिलीं उन्होंने उन सबों का ध्यान से पारायण किया। इस प्रकार बचपन से ही वे बंग साहित्य के ज्ञानी बन गये।

हर भाषा के साहित्यकार को पहले पहल ऐसा ही करना चाहिए। रवीन्द्र नाथ की जीवनी मार्गदर्शक है। एक भाषा के आदिम तथा प्रमुख ग्रन्थों को ध्यान से पढने से ही हम उस भाषा के

---

[1] लगातार = क्रम से

[2] रुचि = इच्छा, आग्रह

[3] सिंच जाना = सिक्त होना

ज्ञानी बन सकते हैं। चाहे अपनी मातृभाषा हो, उसके प्रतिनिधी किताबों को पढने से ही वह उस भाषा पर [1]गर्व कर सकता है। नहीं तो उसकी पढाई से कुछ फायदा नहीं। सुदृढ आधार पर ही सुविशाल मकान बना सकते हैं। एक भाषा के साहित्य के बारे में कुछ भी जाने बिना वह उस भाषा का साहित्यकार कैसे बन सकता है? इस प्रकार बचपन ही से बंग साहित्य के [2]अध्येता होने से ही भविष्य में वे उसी भाषा के विख्यात कवि बन सके थे।

यद्यपि अध्यापक घर में ही आकर पढाते थे तो भी वे अपनी इच्छा के अनुसार रवीन्द्र को पढा नहीं सके। वे साधारण रीति के अनुसार रवीन्द्र को अन्यान्य विषय पढाने लगे। लेकिन रवीन्द्र सिर्फ साहित्य पढना चाहते थे। उन्हें बाकी विषयों की जानकारी की आवश्यकता नहीं थी। इसलिए अध्यापक लोग संस्कृत तथा अंग्रेज़ी के काव्यों का बंगला में [3]तर्जुमा कर रवीन्द्र को सुनाते थे।

---

[1] गर्व करना = अभिमान करना

[2] अध्येता = विद्यार्थि, अध्ययन करनेवाला

[3] तर्जुमा = भाषान्तरीकरण

रवीन्द्र को साहित्य की ओर खींचनेवाली और एक [1] खास बात थी। उनके घर में लगातार [2] साहित्यिक चर्चाएँ होती थीं। उनमें बंगाल के प्रसिद्ध साहित्यकार भाग लेते थे। स्वर्गीय अक्षय कुमार चौधरी, स्वः बिहारीलाल चक्रवर्ती आदि उनके घर में आया करते थे और महान साहित्यिक चर्चाएँ करते थे। वे बडे ध्यान से उन चर्चाओं को सुनते थे और उनके कारण उनके ज्ञान की सीमा [3] दिन-ब-दिन विकसित होती रही। अपनी अवश्यकता की बातें वे उन चर्चाओं से संग्रहीत करते थे। ये बातें उनके लिए भविष्य में अतीव उपयुक्त रहीं।

साहित्यिक चर्चाओं के साथ साथ संगीत पर भी चर्चाएँ होती थीं। संगीत की [4] लहरें उनको और एक लोक में ले जाती थीं। कलाप्रेमी रवीन्द्र का भावुक हृदय संगीत से सिक्त हुआ। साहित्य के साथ ही संगीत ने भी उनके मन में स्थान पाया। संगीत की तरंगों में वे स्वयं भूलकर बह जाते थे। इस प्रकार ठाकुर संगीत कला का भी आराधक बन गये। इसलिये उनकी कविताओं में

---

[1] खास = विशेष

[2] साहित्यिक = साहित्य संबधी

[3] दिन-ब-दिन = दिन-हर-दिन

[4] लहरें =तरंगें

आज भी संगीतात्मकता दिखाई पड रही है। यदि कविता और संगीत एक साथ मिल जाते हैं तो कितना अच्छा होता!

उन दिनों में मैथिलकोकिल विद्यापति वंग कवि के रूप में माने जाते थे। लेकिन अब व्यक्त हो गया कि वे हिन्दी के कवि हैं। वे किसी भी भाषा के कवि हों, उनकी कविता की बडी एक विशेषता है। गीतों में लिखी गयी वे कविताएँ संगीतात्मक हैं। रवीन्द्र ने बचपन में उन गीतों को दिलचस्पी के साथ पढा था। उनके प्रति उनका प्रेम अधिक था। इसलिए उनका अनुकरण करके रवीन्द्र ने कुछ गीत लिखे। वे भी संगीतात्मक हैं। वास्तव में रवीन्द्र की कविताओं की बडी विशेषता उनकी संगीतात्मकता ही है।

रवीन्द्रनाथ अच्छा गाते भी थे। वैष्णव भक्त कवियों के गीत अत्यंत रागपूर्ण रूप में वे गाते थे। उनकी आवाज़ [1] सुरीली थी। "वे पक्षी के समान गाते थे",—देशबंधु सी. एफ. एनडरूस कहते हैं— "और उन भक्तिमय गीतों में लीन होकर महर्षि देवेन्द्रनाथ समाधि की अवस्था तक पहुँच जाते थे।" "देवेन्द्रनाथ वास्तव में एक महर्षि थे। महर्षि लोग "समाधि" चाहनेवाले थे ही। उस

---

[1] सुरीली = मधुर

के लिए उन्हें तप करना पडता था। लेकिन हमारे महर्षि के पूर्व-तपों का फल [1] साक्षात् हुआ। वही रवीन्द्रनाथ था। अपने को समाधिस्थ अवस्था तक ले जानेवाले साधन से एक महर्षि कैसे [2] अलग हो सकता है? यही बात महर्षि की भी थी। देवेन्द्रनाथ बालक रवीन्द्र को हमेशा अपने पास रखना चाहते थे। इसलिए वे अपनी यात्राओं में रवीन्द्र को भी साथ ले जाया करते थे। रवीन्द्र अपने गीतों से महर्षि को अतुल्य आनन्द प्रदान करते थे।

एक बार महर्षि हिमालय में गये। वहाँ की प्रशान्त प्रकृति में लीन होकर तप में विलीन होना ही उनका उद्देश्य था। साथ रवीन्द्र को भी ले जाने का निश्चय किया। रवीन्द्र को इससे बढकर खुशी किसमें होती! प्राकृतिक सुषमाओं का आलय हिमालय के सपने वे देखा करते थे। अब वे सपने साक्षात् होनेवाले हैं। स्वप्नों के साक्षात् होते वक्त खुशी होगी ही। माता की मृत्यु के बाद प्रकृति ही उनकी माता बनी थी। [3] जननी माता और [4] धात्री माता दोनों प्रकृति ही थी। उस प्रकृति की सर्वांगीण

---

[1] साक्षात् होना = प्रत्यक्ष होना

[2] अलग होना = बिछुड जाना

[3] जननी माता = माता जिसने जन्म दिया

[4] धात्री माता = पालनेवाली माता

सुन्दरता तथा महिमा का अनुभव कुछ ही दिनों में होनेवाला है। आखिर पिता और पुत्र हिमालय की [1]तराइयों में पहुँचे। वहाँ वे कई दिनों तक रहे। उस छोटी आयु में वे अपनी आत्मा को प्रकृति की आत्मा में विलीन कर सके। यहाँ वे स्वतन्त्र बनकर हिमालय के विशाल वक्ष में [2]विचरने लगे। कभी कभी महर्षि अपने बेटे को पढाते भी थे। अंग्रेज़ी और संस्कृत की अच्छी शिक्षा हिमालय में ही हुई। यहीं उनकी मानसिक तथा शारीरिक उन्नति हुई थी। कुछ महीनों के बाद वे अपने नौकर किशोरी के साथ कलकत्ता लौटे।

घर में अब उन्हें अस्वतन्त्रता नहीं थी। वे अपनी इच्छा के अनुसार लिखने, पढने और लोगों से बातें करने लगे। बडे भाई नाटक, कविता आदि लिखते थे। घर में लगातार बडे बडे कवि और लेखक आते रहे। इन अनुकूल [3]वातावरणों से उनकी कवित्व-भावना जाग्रत हुई। वे भी कविताएँ लिखने लगे।

एक बार रवीन्द्र ने कुछ कविताएँ लिखीं। उन्हें पढकर एक मित्र ने कहा कि शायद *चण्डीदास और विद्यापति भी ऐसी कविताएँ

---

[1] तराई = तल्हटी

[2] विचरना = इच्छानुसार चलना फिरना

[3] वातावरण = परिस्थिति

* बंगाल के एक प्रसिद्ध कवि थे चण्डीदास।

लिख नहीं सकेंगे। लेकिन आखिर उस मित्र को मालुम हुआ कि ये कविताएँ रवीन्द्र की ही थीं। उसे बडा आश्चर्य हुआ। वे कविताएँ "भारती" नामक पत्रिका में [1]प्रकाशित हुई। उस कविता में रवीन्द्र ने अपना एक तूलिका-नाम दिया था—भानुसिंह। उस समय के प्रगाढ पंडित डाक्टर निशीकांत चटर्जी ने इसका एक [2]आस्वादन भी लिखा था।

भारती पत्रिका की [3]संपादक-समिति में रवीन्द्र भी थे। इस समय उन्होंने "मेघनाद वध" नामक प्रसिद्ध बंगाली काव्य की [4]आलोचना लिखी। मेघनाद वध श्री. मईकेल मधुसूदनदत्तका काव्य था। वंग भाषा में ही नहीं, अन्य भाषाओं में भी इसका उन्नत स्थान है। विद्यार्थी के रूप में रवीन्द्र ने इसका खूब अध्ययन किया था। इस काव्य ने रवीन्द्र को प्रभावित किया था। भारती में रवीन्द्र ने मेघनाद वध पर जो आलोचना लिखी थी वह लोगों की

---

[1] प्रकाशित होना = छपा जाना

[2] आस्वादन = वह लेख जिसमें एक रचना की विशेषताएँ बतायी गयी हैं।

[3] संपादक-समिति = पत्रकार-समिति (Editorial Board)

[4] आलोचना = वह लेख जिस में एक कृति के गुण दोषों का विचार हों। (Criticism)

प्रशंसा का पात्र बन गयी। इसके बाद उन्होंने "कवि काहनी" नामक कविता लिखी। कवि काहनी ही रवीन्द्र की पहली प्रकाशित पुस्तक थी।

[1] विलायत में रहते समय रवीन्द्र ने "भग्न हृदय" नामक एक कविता की रचना की। भारत लौटने के बाद यह कविता प्रकाशित हुई। रसिकों ने उचित रूप से इसका भी स्वागत किया।

प्रसिद्ध अंग्रेजी नाटककार शेक्स्पीयर के नाटक पढने में रवीन्द्र को बडी दिलचस्पी थी। शेक्स्पीयर, (Shakespeare) मिल्टन, (Milton) बयरन (Byron) आदि अंग्रेज़ी कविगण रवीन्द्र के आराधना-पात्र थे। अंग्रेज़ी साहित्य पढने में रवीन्द्र की दिलचस्पी देखकर कई विद्वान उनको प्रोत्साहन देते रहे। उनमें श्री. अक्षय चौधरी प्रमुख थे। वे अंग्रेजी के पंडित थे। अंग्रेज़ी के नाटक तत्वों को मन में रख भारतीय [2] पृष्ठभूमि को आधार बनाकर रवीन्द्र ने "वाल्मीकी प्रतिभा" नामक एक नाटक लिखा। उसके बाद "काल मृगया" और "मायरखेला" नामक अन्य दो नाटकों की भी रचना की। इन नाटकों के प्रदर्शन में रवीन्द्र ने भी [3] सराहनीय

---

[1] विलायत = इंग्लैंड (England)

[2] पृष्ठभूमि = Background

[3] सराहनीय = प्रशंसनीय

रूप से भाग लिया था। इसके बीच बीच में रवीन्द्र उत्तम कविताएँ भी रचते थे जो संगीतात्मक तथा शब्दसुन्दर भी थीं। इस समय की प्रकाशित विख्यात कविता थी "संध्या संगीत"।

बीस बरस की आयु में रवीन्द्र नाथ की शादि हुई। सहधर्मिणी का नाम था मृणालिनी देवी। वे अत्यन्त सुन्दरी और सुशीला थी। भावुक पति के लिए सब प्रकारों से योग्य पत्नि! शादी के बाद रवीन्द्र अपनी स्त्री के साथ "शिलेयदा" नामक गाँव में गये। वहाँ के एस्टेटों की [1]देखभाल करते हुए वे उस गाँव में रहे। वहाँ के रहते वक्त उन्हें साधारण जीवन से परिचित होने का सुअवसर मिला। उस गाँव के साधारण कृषकों को निकट देखने से रवीन्द्र उनके सामान्य जीवन के अंग अंग का निरीक्षण कर सके। उस समय तक रवीन्द्र की ज़िन्दगी उन्नत तलों से [2]उतरकर नीचे नहीं आयी थी। उनकी जिन्दगी की सीमा कुछ संकीर्ण-सी थी। लेकिन मन की सीमा अतिविशाल थी। ग्रामीणों की शोचनीय स्थितियों का ठीक ज्ञान उन्हें शिलेयदा गाँव में ही हुआ था। उनको मालुम हुआ कि गाँवों की स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। इसलिए वे [3]ग्रामसुधार को लक्ष्य बनाकर कुछ लिखने

---

[1] देखभाल = संरक्षण [2] उतरना = नीचे की ओर आना
[3] ग्राम सुधार = ग्रामों का उद्धरण

लगे। वंग साहित्य में यह एक नयी [1] मोड थी। वंग साहित्य पर इस रीति का उचित प्रभाव हुआ।

इस समय तक रवीन्द्र "बंगाल का * शेली" Shelly of Bengal) नाम से प्रख्यात हुए। एक कवि के रूप में ही नहीं, एक आचार्य के रूप में भी ठाकुर विख्यात हैं। १९०१ में "शान्ति निकेतन" की स्थापना हुई। आप पढ चुके कि महर्षि देवेन्द्र नाथ तपस्या के लिए उचित स्थान की खोज में इधर उधर गये थे। इसी उद्देश्य से ही वे रवीन्द्र के साथ हिमालय में गये थे। लेकिन कहीं उनको शांतिप्रद स्थान न मिला। बहुत दिन बाद कलकत्ता से सौ मील दूर पर उन्हें "बोलपुर" नामक एक स्थान दिखाई पडा। वे बोलपुर में घूमने फिरने लगे। अन्त में वे एक वृक्ष के नीचे जा बैठे। उनके साथ बालक रवीन्द्र भी था। रात भर महर्षि उसी पेड के नीचे ध्यान मग्न रहे। सवेरे उन्होंने अपने पुत्र से कहा— "मैं यहीं रहूँगा, यहीं मरूँगा और यहीं चिरशाँति पाऊँगा। ....यही मेरा शांतिनिकेतन है!"

बरसों के बाद रवीन्द्र के मन में उसी स्थान पर एक आश्रम चलाने की इच्छा हुई। उनका उद्देश्य एक गुरुकुल के समान

---

[1] मोड = Turning Point

* शेली = अंग्रेज़ी का अमर कवि

इसको चलाना था। इस इच्छा के साथ वे अपने पिता के पास गये। शांतिनिकेतन नामक एक विद्यालय चलाने की आज्ञा माँगी। पिता की खुशी की सीमा न रही। उन्होंने उस स्थान को अपने पुत्र के हाथों सौंप दिया। इस प्रकार शांतिनिकेतन की स्थापना हुई।

शांतिनिकेतन में विद्यार्थियों को कलापूर्ण शिक्षा दी जाती थी। अन्य विद्यालयों [2] की भाँति यहाँ विद्यार्थियों को पढाने के लिए [3] खास मकान नहीं था। लता निकुंजों में, विशाल वृक्षों की शीतल छायाओं में बैठकर विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। विद्यार्थी और अध्यापक के बीच में [4] अटूट स्नेह संबन्ध था। ठाकुरजी सभी विद्यार्थियों के "गुरूदेव" थे। गुरूदेव उनके लिए सब कुछ था। गुरूदेव उन्हें अनुपम रूप से पढाते थे। गीत गा गा सुनाते थे। कविताओं का पारायण करते थे। विद्यार्थियों के साथ नाटकों का अभिनय करते थे।

इस विद्यालय की विख्याति बढ गयी। विद्यार्थियों की संख्या भी बढने लगी। तब इस में कुछ परिवर्द्धन करने का निश्चय

---

[1] सौंप देना = अर्पण करना

[2] की भाँति = की तरह

[3] खास = विशेष

[4] अटूट = सुदृढ

हुआ। १९२१ में शांतिनिकेतन "विश्वभारती" बन गया। देश से ही नहीं विदेशों से भी विद्यार्थी यहाँ आकर पढते थे। देशी और विदेशी विद्यार्थी एक साथ मिलजुल कर रहते थे। इसलिए उनके बीच में सांस्कृतिक [1]आदान-प्रदान होने लगे। इस प्रकार विभिन्न संस्कृतियों में [2]एकरूपता स्थापित करना विश्वभारती के लक्ष्यों में एक है। यहाँ संगीत, साहित्य, चित्रकारी, नृत्त, अभिनय आदि ललित कलाओं में शिक्षा दी जाती है। यह सुनकर शायद आप को [3]अचंभा होगा कि ठाकुरजी स्वयं एक चित्रकार थे।

शांतिनिकेतन के [4]संचालन में ठाकुर की पत्नि मृणालिनी देवी का प्रधान हाथ रहा। वे हर समय इस संस्था की उन्नति के लिए अश्रान्त परिश्रम करती रही। लेकिन अधिक दिन तक वे यह कार्य कर न सकी। १९०२ में वे पाँच बच्चों को छोडकर [5]चल बसीं। यह रवीन्द्र के लिए असीम दुःख का कारण बन गया। इसके साथ साथ उनकी तीन संतानों की भी मृत्यु हुई। उनका हृदय विकल हुआ।

---

[1] आदान-प्रदान = लेन-देन

[2] एकरूपता = एकीकृत रूप

[3] अचंभा = आश्चर्य

[4] संचालन = चलाना

[5] चल बसना = मर जाना

हृदय [1] विपंचिका झंकृत हुई। उस में से करुणा के नाद बहने लगे। इसके फलस्वरूप "स्मरण" नामक करुणापूर्ण कविता की रचना हुई।

ठाकुर की रची अनेक रचनाएँ हैं। लेकिन जिस रचना ने उन्हें विश्व विख्यात कवि बना दिया था वह थी "गीतांजली"। प्रौढ आध्यात्मिक चिन्ताओं के आधार पर रचे सौ से अधिक [2] मुक्तकों का संग्रह है गीतांजली। आध्यात्मिक तथा दार्शनिक बातों पर आधारित कविताएँ [3] प्रायः विरस होती हैं। लेकिन गीतांजली की बात अलग है। इसका हर एक पद गेय है। कुछ लोग इसे बीसवीं सदी की "गीता" भी कहते हैं।

१९०९ में गीतांजली की रचना बंगभाषा में हुई। १९१२ में ठाकुर ने इसे अंग्रेज़ी में [4] अनुवादित किया। जब वे उस साल विलायत में गये तब अंग्रेज़ी अनुवाद को कई अंग्रेज़ी कवियों और विद्वानों को दिखाया। एक भारतीय की प्रतिभा देखकर वे सब

---

[1] विपंचिका = वीणा

[2] मुक्तक = वह पद जिसके भाव अपने में संपूर्ण है और दूसरे पद से जिसका संबंध नहीं

[3] प्रायः = साधारणतया

[4] अनुवादित करना = भाषान्तरीकरण

[1] दंग रह गये। एच. जी. वेल्स, (H. G. Wells) बर्टरांड रस्सल (Bertrand Russel) आदि पंडितों ने भी ठाकुर की खूब तारीफ की। इसकी अर्थ संपुष्टि, आशयों की गंभीरता, आध्यात्मिक प्रौढता आदियों ने उन्हें उसकी ओर आकर्षित किया। अयरलैंड के महाकवि W. B. यीट्स (W. B. Yeats) साहब के नेतृत्व में अंग्रेज़ी के कवियों का एक महासम्मेलन हुआ और उस सम्मेलन में ठाकुर [2] सम्मानित किये गये। इससे बढकर और एक महान घटना भी हुई। १९१२ का "नोबल पुरस्कार" (Nobel Prize) ठाकुर की गीतांजली को मिला। इससे यह निश्चित हो गया कि उस साल की अत्युत्तम रचना गीतांजली थी। ठाकुर विश्व महाकवि बन गये। [3] पुरस्कार के रूप में उन्हें आठ हज़ार [4] अशर्फियाँ मिली थीं। इस संख्या को उन्होंने शांति निकेतन की उन्नति के लिए रख दिया। सब कहीं ठाकुर का यश फैल गया। कलकत्ता, ढाका, उस्मानिया आदि विश्वविद्यालयों ने ठाकुर को सम्मानित करने के लिए डी. लिट्. की [5] उपाधियाँ दीं और स्वयं सम्मानित हुए। १९१४ में इंग्लैंड के

---

[1] दंग रह जाना = अचरज में पठ जाना

[2] सम्मानित करना = आदर देना

[3] पुरस्कार = इनाम

[4] अशर्फियाँ = सोने के सिक्के

[5] उपाधी = सनद

राजा ने ठाकुर को "नैट" की उपाधि दी। लेकिन १९१८ में ठाकुर ने उस पद को लौटा दिया।

कवि होने पर भी राजनैतिक मामलों में भी ठाकुर [1]दाखिल होते थे। विदेशी सरकार की अनीतियों की [2]कडी आलोचना भी करते थे। भारत पर होनेवाले अत्याचारों को देखने की शक्ति उस महान भारतीय में नहीं थी। लेकिन उनका हृदय विशाल था। वे भारत का नहीं, विश्व का अंग बन गये थे। विश्व के जिन जिन कोनों में अनीति और अत्याचार होते थे वे उनका विरोध करते थे। उसी प्रकार जहाँ [3]अच्छाई थी उनकी तारीफ भी करते थे।

पहले ठाकुर जी वंग-भंग आंदोलन आदि राजनैतिक कार्यों में सजीव रूप से भाग लेते रहे। लेकिन उनको मालुम हुआ कि राजनैतिक मामलों में भाग लेना अपने जीवन का लक्ष्य नहीं। स्वतंत्र विचारवाले कभी अपने को संकुचित सीमा में बंद करना नहीं चाहते। ठाकुर भी स्वतंत्र विचार रखनेवाले एक भावुक कवि थे। उनका कर्म क्षेत्र प्रकृति था। इसलिए गाँधीजी से भी ठाकुर जी को कभी

---

[1] दाखिल होना = प्रविष्ट होना

[2] कडी = कठिन

[3] अच्छाई = भलाई

कभी वादविवाद करने पड़े थे। १९२७ में गाँधीजी के नेतृत्व में जो [4]आन्दोलन हुआ था उसपर ठाकुर जी को विश्वास नहीं था। लेकिन बीहार में जब भूकंप हुआ था, तब पीडित व्यक्तियों की सेवा करने के लिए ठाकुरजी गाँधीजी के साथ कर्मक्षेत्र में आये। इन बातों से व्यक्त होता है कि गुरुदेव के कुछ निश्चित तत्व हैं और किसी भी परिस्थिति में वे [2]उनसे विचलित होना नहीं चाहते थे।

इस प्रकार ठाकुरजी ने सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा दिखाई है। एक कवि के रूप में, गायक के रूप में, अभिनेता के रूप में, आचार्य के रूप में, चित्रकार के रूप में, राजनैतिक के रूप में, दीन-सेवी के रूप में, सब से बढकर एक सहृदय मनुष्यत्व-प्रेमी के रूप में वे हमेशा याद किए जायँगे। भारतमाता की यह महान संतान गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की आत्मा १९४१ अगस्त महीने की ७-वीं तारीख को विश्वात्मा में विलीन हो गयी। मरते समय उनकी आयु ८१ बरस की थी।

उन्होंने भारत में एक स्वर्गराज्य की [4]कल्पना की थी। उस कल्पना को साक्षात् बनाने के लिए वे हर रोज़, हर दम ईश्वर से

---

[1] आन्दोलन = क्रान्ति

[2] विचलित होना = बदलना

[3] अभिनेता = नट

[4] कल्पना = भावना

प्रार्थना करते थे। यह प्रार्थना सिर्फ उनके लिए नहीं थी। भारत के हर एक व्यक्ति के लिए उन्होंने यह प्रार्थना बनायी है। उनका लक्ष्य था कि भारत का हर व्यक्ति ईश्वर से यह प्रार्थना करे। बच्चा-बूढ़ा, आदमी-औरत, अमीर-गरीब सब के सब रोज़ यही प्रार्थना करे। ठाकुर की आत्मा को तभी चिरशांति मिलेगी जब भारत की संतान एक साथ मिलकर एक स्वर में ऐसी प्रार्थना करेगी और उस [1]के फल स्वरूप भारत उनकी कल्पना का वह स्वर्ग राज्य बन जाएगा।

अच्छा, आप भी आज से हर दिन यही प्रार्थना कीजिये—

"जहाँ मन [2]निडर होता है, सर समुन्नत होता है; जहाँ ज्ञान स्वतंत्र होता है;

"जहाँ विश्व संकीर्ण गार्हिक परिधियों में [3] बँट नहीं जाता;

"जहाँ शब्द सचाई के [4]अथाह तलों से उमड पडते हैं,

"जहाँ अश्रान्त परिश्रम संपूर्णता की ओर हाथ बढाता है;

---

[1] के फल-स्वरूप = परिणत फल के रूप में

[2] निडर = भय रहित

[3] बँट जाना = विभक्त होना

[4] अथाह तल= गहन-तल

"जहाँ स्वच्छन्द विवेक-वाहिनी आचारों के विरस मरुस्थल में प्रवेश कर [1] विपथगा नहीं बनती ;

"जहाँ मन विशाल बननेवाली चिन्ता और वृत्ति की ओर [2]अनीत होता है ;

"उस स्वर्ग राज्य में, हे मेरे जगत्-पिता ! मेरा राज्य जाग्रत होकर पहुँच जाये ।"

---

[1] विपथगा = पथ से विचलित

[2] आनीत होना = चलाया जाना

रवीन्द्र की प्रधान रचनाएँ

कविता

संध्या गीत
प्रभात संगीत
कवि काहनी
छवि ओ गान
कडि ओ कोमल
चित्रांगदा
मानसी
सोनारतरी
परश-पाथर
चित्रा
चैताली
कल्पना
कथा
कहानी
दक्षिणा
नैवेद्य
उर्बशी
निर्झरेर स्वप्न भंग
समुद्रमल्लिका
अहल्या
निरक्षण
सागर तरंग
माली
गीतांजली

एकाँकी

मुक्तधारा
कचदेवयानी
कर्ण ओ कुन्ती
नरकनिवास
गान्धारी शाप

नाटक

वाल्मीकी प्रतिभा
कालमृगया
भग्न हृदय
राजा ओ रानी
प्रकृतिर प्रतिशोध
बलि
चित्रांगदा
मालिनी
फाल्गुनि

उपन्यास

राजर्षि
गोरा
शिथिल संबन्ध
बाहर भीतर
नौकानाश

कहानी

काबूलीवाला
डाकबाबू
अर्धरात्रि

अन्य गद्य

विविध प्रसंग
जीवनस्मृतियाँ
आलोचना

रवीन्द्र की रचनाओं का अंग्रेज़ी अनुवाद भी कई निकले हैं। स्वयं रवीन्द्र ने भी कई रचनाएँ अंग्रेज़ी में की और कई कृतियों की तर्जुमा अंग्रेज़ी में की है। उनमें ये प्रमुख है :—

Stray Birds	Gardener
Red Oleanders	Home and the World
Lover's Gift and Crossing	The Wreck
Glimpses of Bengal	Fruits Gathering
Sadhana	King of the Dark Chamber
100 Poems of Kabir	Cresent Moon
Nationalism	Sacrifice
Chitra	Mashi
Gitanjali	Remembrances

प्रश्न

१. रवीन्द्रनाथ के खानदान के बारे में आप क्या जानते हैं ?

२. रवीन्द्रनाथ विद्यालय में जाना क्यों नहीं चाहते थे ?

३. रवीन्द्रनाथ और प्रकृति-सुन्दरता में क्या संबन्ध था ?

४. रवीन्द्र के हृदय का "कवि" किस प्रकार जाग्रत हुआ ?

५. रवीन्द्र को एक साहित्य-सेवी बनानेवाली परिस्थितियाँ कौन सी थीं ?

६. रवीन्द्र की कविताओं की बडी विशेषता कौन सी है, और उसके क्या कारण हैं ?

७. संध्या संगीत के बारे में आप क्या जानते हैं ?

८. ग्रामीणों के जीवन से रवीन्द्र कब और कैसे परिचित हुए ?

९. शान्तिनिकेतन की स्थापना कैसे हुई ? उसके बारे में आप क्या क्या जानते हैं ?

१०. शान्तिनिकेतन कब और कैसे विश्वभारती बन गया ?

११. विश्वभारती की विशेषताएँ क्या क्या हैं और उसका लक्ष्य क्या है ?

१२. स्व० मृणालिनी देवी का परिचय देते हुए बताइये कि रवीन्द्र की ज़िन्दगी में उनका क्या स्थान था ?

१३. "स्मरणा" नामक कविता की रचना कब और कैसे हुई ?

१४. बीसवीं सदी की गीता कौन सी है ? उसकी रचना और विशेषताओं के बारे में आप को क्या मालुम है ?

१५. पश्चिमी राज्यों में गीतांजली का क्या महत्व है ?

१६. ठाकुर जी किस प्रकार विश्वमहाकवि बन गये और उनको कौन कौन सी सम्मतियाँ मिलीं ?

१७. रवीन्द्र राजनैतिक क्षेत्र में काम करना क्यों नहीं चाहते थे ?

१८. एक विद्यार्थी के रूप में रवीन्द्र की जीवनी का सारांश लिखिए।

१९. कवि रवीन्द्र के बारे में संक्षेप में लिखिए।

२०. प्रार्थना को कंठस्थ कीजिए।

MOHAN PUBLICATIONS

(HINDI)

Standard VIII

1. Dhanush Yagna
2. Sri Narayana Guru
3. Shatru Tadha Mitra
4. Phool Aur Taare
5. Viphal Prem

Standard IX

1. Radio
2. Gouri Shankar
3. Eesa Maseeh
4. Shamadan
5. Bachom Ka Bharat

Standard X

1. Ek Doure Ki Kahani
2. Kavivar Ravindranath
3. Shakuntala
4. Vyomayan Ki Katha
5. Sadik

Standard XI

1. Veluthampi
2. Shivaji
3. Sanskriti Ka Ithihas
4. Nala Chritham
5. Do Kahaniyam

APPLY TO

K. PRABHAKARAN NAIR

KAVUVILA HOUSE

JEGATHY, TRIVANDRUM-1.

Cover Printed at the Jayaram Press, Trivandrum.

कविवर रवीन्द्रनाथ

303H
1734
FATHIMA
STD VII A
moudn

संपादक

श्री. पी. जे. जोसफ़
(हिन्दी लेक्चरर, मार ईवान्योस कालेज, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. पी. परमेश्वरन पिल्लै B. Sc. (Eng.)
(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टि B. A; साहित्यरत्न
(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

MOHAN PUBLICATIONS.

राष्ट्र भाषा साहित्य समिति
स्टाच्यू रोड त्रिवेन्द्रम-१

Standard X Book No. 2